रीतिकाल में राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत कवि भूषण

-डॉ. नरेन्द्र पानेरी

महाकवि भूषण का आविर्भाव रीतिकाल में हुआ था। रीतिकाल में लक्षण ग्रन्थों का निर्माण और श्रृंगार वर्णन की प्रवृत्ति प्रधानतया परिलक्षित होती है। परन्तु कविवर भूषण ने उस प्रवृत्ति को आंशिक रूप से अपनाया है। उन्होंने श्रृंगार के वासनामय चित्रों की अपेक्षा वीर रस की ओजस्वी वाणी मुखरित की है। भूषण ने जहां एक ओर शिवा-बावनी और छत्रसाल दशक जैसी वीररसपूर्ण ओजस्वी काव्य कृतियों की रचना की वहीं दूसरी ओर 'शिवराज भूषण' जैसे अंलकार- ग्रन्थ की रचना करने आचार्य परम्परा का निर्वाह किया। किन्तु उनकी दृष्टि लक्षण पर न रहकर लक्ष्य पर अधिक रही है। भूषण ने अपने काव्य का आलम्बन ही ऐसे शौर्य और धर्म रक्षक व्यक्ति को बनाया था जो वीरता के कदमों से अपनी धरती पर चलता है। वीर के साथ शिवाजी धर्मावतार, संस्कृति के प्रतिनिधि और जागरण के अग्रदुत है। इसी आधार पर भूषण राष्ट्रीय चेतना के वाहक बन गए ।

भूषण एक जातीय कवि या राष्ट्र कवि:- हिंदी साहित्य के रीतिकाल में एक ऐसे कवि को राष्ट्रीय रचना से ओत प्रोत थे। यह ठीक है कि उन्होंने शिवाजी और छत्रसाल की प्रशसा की तथा औरगजेब तथा आदिलशाह की निन्दा की किन्तु उस प्रशसा तथा निंदा के आधार पर उन्हें जातीय कवि नहीं माना जा सकता वास्तव में भूषण के समय में जब समाज दुरावस्था में था, राष्ट्र पतन की ओर जा रहा था, समाज में अस्थिरता छाई हुई थी, धार्मिक क्षेत्र में अराजकत्ता बढ़ रही थी तथा राजनीति में अविश्वास तथा अनाचार के कीटाणु घुसते -चले जा रहे थे। ऐसी परिरिस्थिति में भूषण ने जो कार्य किया वह समाज को सही दिश देने वाला, धर्म का रक्षक, अच्छी सत्ता का प्रतिष्ठापक, राष्ट्रोत्थान का कार्य था। अतः भूषण जातीय कवि न होकर राष्ट्रीय चेतना के कवि है।

भूषण की राष्ट्रीय भावना- राष्ट्रीय कवि उसे कह सकते हैं कि जिसमें अपने देश के प्रतितीव्र अनुराग हो और जो अपनी संस्कृति का प्रेमी हो ऋणी हो , राष्ट्र उत्थान एवं सामाजिक चिन्तन में लगा रहता हो। साथ ही अपने राष्ट्र के कर्ण धारो का यशोगान गाने में अत्यधिक आनंद आता है। जो जन-जन के नायक है। किसी भी राष्ट्रीय कवि या भूषण की राष्ट्रीयता को निम्न तत्वों के आधार पर परखा जाता है-

(1) स्वदेशानुराग:- भूषण अपने स्वदेशानुराग के कारण भ्रमण करने सम्पूर्ण भारत गये और उन्होंने यहाँ की स्थिति का पूर्णतया अवलोकन किया। उन्होंने जब यह देखा कि मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदे बनाई जा रही है। काशी के विश्वनाथ मन्दिर को तोड मस्जिद बनवायी और

भारत में इस्लाम के प्रचार का भयकर षड्यन्त्र चल रहा है तब उसका स्वदेशाभिमानी हृदय रो पडता है। यह प्रतिरोध मुसलमान जाति के प्रति न होकर अत्याचारी शासक के प्रति थी। इसी कारण स्वदेशानुराग से ओतप्रोत हो भूषण ने लिखा है

'कासीहू की कला गई मथुरा मसीद गई
सिवानी न हो तो तो सुनति होती सबकी"

(2) सांस्कृतिक प्रेमः- भूषण भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा अनुराग रखते थे। भारतीय संस्कृति में आध्यात्म, त्याग, डोटिसा, सहृदयता एवं धार्मिक सहिष्णुता आदि पर बल दिया गया है। इसीलिए ओरंगजेब भारतीय रीतिरिवाज तथा मान्यताओं को तहस-नहस करने में जुटा था। अपनी संस्कृति की यह दशा देख भूषण का हृदय करहा उठता हेल तोवह कहते है-

"मच्छन्द कच्छ में काल नरसीह में बावन गनि भूषन जो है
जो द्विज राम में जो रघराव में जोइन कहू बलराम है"

(3)धार्मिक भावः- भूषण की धार्मिक भाव सम्बन्धी राष्ट्र भावना को उन स्थलों में देखा जा सकता है जहा अन्य मुसलमानों ने वैदिक धर्म को नष्ट करने का पूरा किया-

राजन की हदराखीर तेग बल सिवराज
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यों घर मैं।

(4) राजनीतिक मान्यताः - राष्ट्रकवि होने के नाते भूषण मनु महाराज से लेकर राम, कृष्ण,चन्द्रगुप्त, अशोक, हर्ष आदि सम्राटो के प्रति अनन्य श्रद्धा प्रकट करते हैं। भूषण उस दरबार में गए जहां भारतीय राजनीति का अनुगमन होता हो और जिसने सम्पूर्णभारत में हिन्दुपदशाही की स्थापना का संकल्प लिया हो। भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल की राजनीति की भूरी भूरी प्रशंसा करते है। वे शिवाजी की प्रशंसा करते हुए लिखते है-

बीजापुर गोल कुंडा जीत्यों लरिकाई ही में

ज्वनी आए जीत्यों दिलीपति पातसाह को

(5) साहित्य से अनुराग - प्रत्येक कवि अपने राष्ट्र के परम्परागत साहित्य से प्रेम करता है। भूषण ने वेद शास्त्रों का अध्ययन किया तथा उसी परम्परा का अनुशीलन किया। शिवराज भूषण में भारतीय काव्य शास्त्रों के मान्य अंलकारो का वर्णन किया है।। इसी तरह शिवा बावनी तथा छत्रसाल दशक में उनके

यश का वर्णन करते हुए घटनाओं को न तो विस्तार दिया न वर्णनात्मक पद्धति में लिखा है। केवल उन पर तात्कालिक जनभावनाओ के अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त की है। इसी कारण भूषण के साहित्य में पुरातन साहित्य के प्रति अगाध प्रेम के के दर्शन होते हैं।

(6) समाज प्रेम- भूषण को अपने समाज विशेष प्रेम था इसी कारण वे ओरंगजेब के सामाजिक अत्याचारों व् व्यभिचारो से तिलमिला उठतेथे और चाहते थे कि ऐसे राज्य का विकास हो। तात्कालिन सामाजिक दुर्दशा से शुब्ध होकर भूषण से निम्नलिखित कवित्त लिखा-

"बैठती दुकाने ले के रानी रजवारन की

तहाँ आई बादशाह राह देखे सबकी

बेटिन को यार और यार है लुगाइन को

राइन के भार दाबदार गए दबकी "

(8) भाषा प्रेम: -राष्ट्रीय कवि, राष्ट्र भाषा तथा मातृभाषा से अगाध प्रेम रखता है और उसी में अपनी समस्त रचनाएँ प्रस्तुत करता है भूषण ने शिवा-बावनी में शिवाजी के दरबार की मराठी भाषा तथा छत्रसाल दशक में छत्रसाल के दरबार की बुन्देली भाषा के जोर होने के बावजूद हिन्दी ही में अपनी रचना प्रस्तुत की तथा पुरस्कार प्राप्त किए भूषण का अपने देश भाषा तथा राष्ट्र भाषा से रागात्मक संबंध था उसी के आधार पर दक्षिण भारत के निवासियों को रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने भारत में भाषागत चेतना जागृत करने का प्रयास किया था

(8) जननायको के प्रति अटूट श्रद्धा-

भूषण ने जिन दो नायको शिवाजी तथा छत्रसाल का यशोगान किया है वे दोनो ही सदैव अन्याय के दमन में तत्पर रहे हैं, धर्मरक्षा एवं राष्ट्र रक्षा के लिए तलवार लेकर युद्ध क्षेत्र में आए हैं। वे राष्ट्र के प्रतिनिधि वीर मानेगये है। ऐसे वीरो की प्रशंसा आश्रयदाताओ की कोरी प्रशंसा नहीं है अपितु सज्जनों के परित्राणकारी वीरो की प्रशंसा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक लिखा है-

" शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवि जूठी खुशामद नहीं कह सकता। ये आश्रयदाताओं की प्रशंसा मात्र प्रथा का अनुसरण नहीं है। इन दो वीरो का जिस उत्साह से सारी हिंदू जनता स्मरण करती है उसी की व्यंजना भूषण ने की है।" अतः भूषण ने जिन जननायको का वर्णन

किया वे राष्ट्र के कर्णधार थे , वो उनके प्रति वर्णित भावों में कवि की राष्ट्रीय भावना ही सर्वत्र उमड़ रही है।

निष्कर्ष: उपर्युक्त विवेचन के यधार पर हम भूषण को राष्ट्रकवि मानते हैं। उनके काव्य में स्वदेशानुराग, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, चेतना विद्यमान ही भूषण ने सम्पूर्ण काव्य का निर्माण युग-चेतना से अनुप्राणित होकर किया है। उनकी कविता में लोकमंगल की भावना अंकित है और राष्ट्रीय नवोत्थान की श्रेयमयी चेतना वर्णित है। इसी कारण वे जातीय कवि न होकर राष्ट्र की मंगल चेतना एवं उदात्त भावना से परिपूर्ण एक राष्ट्रीय कवि है।

सन्दर्भ सूची-

1 भूषण ग्रंथावली – शिवप्रसाद मिश्र

2 हिंदी साहित्य के प्राचीन प्रतिनिधि कवि-द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

3 हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

4 शिवा बावनी –भूषण प्रकाशक हिंदी साहित्य सम्मेलन

5 छत्रसाल दशक – भूषण प्रकाशक हिंदी साहित्य सम्मेलन

डॉ नरेन्द्र पानेरी

सह आचार्य (हिंदी)

श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय बाँसवाड़ा (राजस्थान)